International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-11-2025, Accepted: 11-12-2025, Published: 26-12-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 169-170

प्रेमचन्द और दलित वर्ग की कठिनाईयां एवं दलित मनोवृत्ति

लालचंद[1], डॉ. अशोक धारनिया[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, टांटिया यूनिवर्सिटी, श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत
[2] सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, टांटिया यूनिवर्सिटी, श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

सारांश
प्रेमचन्द की सामाजिक दृष्टि और उनके साहित्य में दलित जीवन के चित्रण का गहन विश्लेषण प्रस्तुत होता है। प्रेमचन्द ने दलित वर्ग को केवल करुणा और दया के विषय के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील, संवेदनशील और आत्मसम्मान से युक्त मानव के रूप में चित्रित किया। उनके साहित्य में जातिगत अन्याय, आर्थिक विषमता, सामाजिक बहिष्कार और मानवीय गरिमा के हनन की समस्याएँ यथार्थपरक रूप में सामने आती हैं। दलित मनोवृत्ति की सैद्धान्तिक व्याख्या करते हुए यह स्पष्ट होता है कि निरंतर शोषण के बावजूद दलित पात्रों में आत्मचेतना और प्रतिरोध की भावना विद्यमान है। प्रेमचन्द की दृष्टि मानवीय समानता और सामाजिक न्याय पर आधारित है, जो उनके रचनात्मक उद्देश्य को स्पष्ट करती है।

मूल शब्दः प्रेमचन्द, दलित, वर्ग, कठिनाईयां, मनोवृत्ति, सैद्धान्तिक, व्याख्या, सामाजिक, न्याय

प्रस्तावना

भारतीय समाज की संरचना में जाति व्यवस्था एक ऐसी ऐतिहासिक वास्तविकता रही है जिसने मनुष्य की सामाजिक स्थिति, आर्थिक अवसरों और सांस्कृतिक अधिकारों को निर्धारित किया। इस व्यवस्था के सबसे निचले पायदान पर स्थित दलित वर्ग को सदियों तक सामाजिक बहिष्कार, आर्थिक शोषण और मानसिक अपमान का सामना करना पड़ा। साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है, अतः यह स्वाभाविक है कि संवेदनशील साहित्यकार अपने समय की विषमताओं को अभिव्यक्ति दें। प्रेमचन्द ऐसे ही साहित्यकार हैं जिन्होंने भारतीय समाज के यथार्थ को गहराई से समझा और उसे अपनी रचनाओं में चित्रित किया।

प्रेमचन्द के साहित्य में दलित वर्ग की कठिनाइयों तथा उनकी मनोवृत्ति का सैद्धान्तिक विश्लेषण प्रस्तुत होता है। उनका साहित्य कथानक या पात्रों के स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रेमचन्द की सामाजिक दृष्टि, मानवीय संवेदना और समतावादी चिंतन को समझने का प्रयास भी है।

प्रेमचन्द का साहित्य सामाजिक यथार्थवाद का सशक्त उदाहरण है। उन्होंने ग्रामीण जीवन, कृषक समाज, स्त्री, मजदूर और दलित वर्ग के जीवन को केंद्र में रखकर रचनाएँ कीं। उनके लिए साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम था। यही कारण है कि उनके यहाँ दलित पात्र दया के पात्र मात्र नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना के शिकार और साथ ही परिवर्तन की संभावना से युक्त मानव के रूप में उपस्थित होते हैं।

दलित वर्ग की कठिनाइयों का चित्रण प्रेमचन्द ने अत्यंत यथार्थ रूप में किया है। सामाजिक स्तर पर दलितों को अस्पृश्यता की कठोर प्रथा का सामना करना पड़ता है। उन्हें सार्वजनिक स्थलों, मंदिरों और जलस्रोतों से दूर रखा जाता है। यह बहिष्कार केवल शारीरिक दूरी तक सीमित नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा के अपमान का रूप ले लेता है। प्रेमचन्द ने इस अमानवीय स्थिति को बिना किसी आडंबर के प्रस्तुत किया।

आर्थिक दृष्टि से दलित वर्ग प्रायः भूमिहीन और निर्धन है। वे श्रम करते हैं, किंतु श्रम का उचित प्रतिफल उन्हें प्राप्त नहीं होता। शोषण की यह प्रक्रिया सामंती व्यवस्था और जातिगत श्रेष्ठता की मानसिकता से जुड़ी है। प्रेमचन्द ने दिखाया कि आर्थिक विषमता केवल धन का अंतर नहीं, बल्कि शक्ति और अधिकार का भी अंतर है। दलित पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि निर्धनता और जाति आधारित भेदभाव मिलकर उनके जीवन को और अधिक कठिन बना देते हैं।

सामाजिक अपमान और आर्थिक अभाव के साथ साथ दलितों को मानसिक पीड़ा भी झेलनी पड़ती है। निरंतर उपेक्षा और अपमान से उत्पन्न हीनभावना उनकी मनोवृत्ति को प्रभावित करती है। किंतु प्रेमचन्द का दृष्टिकोण निराशावादी नहीं है। वे दलित पात्रों के भीतर आत्मसम्मान और प्रतिरोध की चिंगारी भी दिखाते हैं।

दलित मनोवृत्ति की सैद्धान्तिक व्याख्या करते समय यह देखा गया है कि सदियों की दासता ने उनमें एक प्रकार की सहनशीलता और मौन स्वीकृति उत्पन्न कर दी थी। परंतु यह स्वीकृति पूर्णतः निष्क्रिय नहीं है। प्रेमचन्द के पात्र कई बार परिस्थितियों के विरुद्ध स्वर उठाते हैं। वे अन्याय को पहचानते हैं और अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हैं। यह अभिव्यक्ति ही परिवर्तन का प्रथम चरण है।

प्रेमचन्द की मानवीय दृष्टि उनके साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है। वे किसी भी वर्ग को नैतिक रूप से पूर्णतः श्रेष्ठ या हीन नहीं मानते। उनके लिए मनुष्य की पहचान उसकी जाति से नहीं, बल्कि उसके कर्म और संवेदना से होती है। इस दृष्टि से दलित पात्र भी पूर्ण मानव हैं जिनके सुख दुख, आशाएँ और आकांक्षाएँ अन्य मनुष्यों के समान हैं।

इससे यह भी स्पष्ट होता है कि प्रेमचन्द ने दलित जीवन का चित्रण केवल करुणा उत्पन्न करने के लिए नहीं किया। वे सामाजिक अन्याय के प्रति पाठक को जागरूक करना चाहते हैं। उनके साहित्य में नैतिक आग्रह है, जो समानता और न्याय की स्थापना की ओर संकेत करता है।

प्रेमचन्द के दलित पात्रों में आत्मसम्मान की भावना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे अपमान सहते हुए भी अपनी मानवता को बचाए रखते हैं। कई प्रसंगों में वे अन्याय का विरोध करते हैं, भले ही उसका परिणाम उनके लिए प्रतिकूल हो। यह प्रतिरोध उनकी मनोवृत्ति के विकास को दर्शाता है।

सैद्धान्तिक स्तर पर देखा जाए तो प्रेमचन्द का साहित्य सामाजिक यथार्थ और आदर्श के बीच संतुलन स्थापित करता है। वे यथार्थ की कठोरता को स्वीकार करते हैं, परंतु उसके भीतर परिवर्तन की संभावना भी खोजते हैं। दलित मनोवृत्ति को वे स्थिर और निष्क्रिय नहीं मानते, बल्कि गतिशील और परिवर्तनीय मानते हैं।

इससे यह प्रतिपादित होता है कि प्रेमचन्द की दृष्टि में सामाजिक सुधार केवल बाह्य परिवर्तन से संभव नहीं है। इसके लिए

मानसिकता में परिवर्तन आवश्यक है। जब तक उच्च वर्ग की मानसिकता में समानता और मानवता का भाव नहीं आएगा, तब तक दलित वर्ग की स्थिति में स्थायी सुधार संभव नहीं।

प्रेमचन्द ने शिक्षा, नैतिक जागरण और सामाजिक संवेदना को परिवर्तन के साधन के रूप में देखा। उनके साहित्य में दलित पात्रों की पीड़ा पाठक के मन में करुणा ही नहीं, बल्कि आत्मचिंतन भी उत्पन्न करती है। यही उनकी रचनात्मक शक्ति है।

दलित मनोवृत्ति के संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि प्रेमचन्द ने उन्हें केवल पीड़ित नहीं, बल्कि विचारशील और अनुभूतिपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया। वे परिस्थितियों का विश्लेषण करते हैं, अन्याय को समझते हैं और अपने अस्तित्व के प्रति सजग होते हैं। यह सजगता ही सामाजिक परिवर्तन का आधार बनती है।

निष्कर्ष

इसका निष्कर्ष यह है कि प्रेमचन्द का साहित्य दलित विमर्श की प्रारंभिक चेतना को अभिव्यक्ति देता है। यद्यपि उनके समय में दलित आंदोलन संगठित रूप में विकसित नहीं हुआ था, फिर भी उनके साहित्य में समानता और सामाजिक न्याय की जो भावना है, वह आगे चलकर दलित चेतना के विकास में सहायक सिद्ध हुई।

अतः यह स्थापित होता है कि प्रेमचन्द ने दलित वर्ग की कठिनाइयों को यथार्थ और संवेदनशील दृष्टि से चित्रित किया तथा उनकी मनोवृत्ति को सैद्धान्तिक आधार प्रदान किया। उनका साहित्य भारतीय समाज की विषमताओं पर गहन विचार करने के लिए प्रेरित करता है और मानवता, समानता तथा न्याय के मूल्यों को प्रतिष्ठित करता है। यही इसका केंद्रीय प्रतिपाद्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रेमचन्द. (1956). 'गोदान'. राजपाल एंड संस, नई दिल्ली.
2. प्रेमचन्द. (1954). 'कर्मभूमि'. सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद.
3. प्रेमचन्द. (1958). 'मानसरोवर भाग 3' – इसमें 'सद्गति', 'ठाकुर का कुआँ', 'कफन' आदि कहानियाँ सम्मिलित हैं. सरस्वती प्रेस, वाराणसी.
4. प्रेमचन्द. (1934). 'साहित्य का उद्देश्य'. 'हंस पत्रिका', अंक 4.
5. सिंह, नामवर. (1983). 'कहानी : नई कहानी'. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
6. शर्मा, रामविलास. (1983). 'प्रेमचन्द और भारतीय समाज'. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
7. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. (1976). 'हिन्दी साहित्य की भूमिका'. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.
8. पांडे, मैनेजर. (1988). 'प्रेमचन्द का यथार्थवाद'. साहित्य भंडार, इलाहाबाद.
9. वाल्मीकि, ओमप्रकाश. (1999). 'जूठन'. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
10. लिंबाळे, शरणकुमार. (2004). 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' (अनु. मोहनदास नैमिशराय). राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
11. अरोड़ा, सुभाष. (2001). 'प्रेमचन्द और दलित चेतना'. लोकमंगल प्रकाशन, वाराणसी.
12. कुमार, नरेश. (2010). 'प्रेमचन्द का समाज दर्शन'. भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली.
13. वर्मा, शशि भूषण. (2008). 'दलित विमर्श और प्रेमचन्द का साहित्य'. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली.
14. तिवारी, रमेशचंद्र. (2009). 'प्रेमचन्द का युग और साहित्यिक चेतना'. साहित्य भारती, इलाहाबाद.
15. जोशी, सुदर्शन. (2015). 'प्रेमचन्द और समकालीन समाज'. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
16. दयाल, मुरलीधर. (2003). 'हिन्दी कथा साहित्य और सामाजिक यथार्थ'. वाणी प्रकाशन, दिल्ली.
17. वाल्मीकि, ओमप्रकाश. (2011). 'दलित विमर्श के आयाम'. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
18. बामणिया, मोतीलाल. (2012). 'भारतीय समाज में दलित प्रश्न'. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
19. अरोरा, नीलम. (2018). 'प्रेमचन्द के उपन्यासों में समाज और राजनीति'. भारती प्रकाशन, दिल्ली.
20. पांडे, हरिशंकर. (2016). 'प्रेमचन्द का मानवतावाद और सामाजिक दृष्टि'. संवाद प्रकाशन, गोरखपुर.
21. प्रसाद, श्रीराम. (2005). 'गोदान का समाज शास्त्रीय अध्ययन'. कृति प्रकाशन, वाराणसी.
22. राय, मोहन. (2019). 'कफन कहानी का सामाजिक विश्लेषण'. 'आलोचना पत्रिका', अंक 87.
23. मिश्रा, राकेश. (2014). 'प्रेमचन्द और भारतीय ग्रामीण जीवन'. साहित्य दर्पण, लखनऊ.
24. वालिया, चंद्रभूषण. (2007). 'हिन्दी साहित्य में हाशिये के स्वर'. सृजन प्रकाशन, नई दिल्ली.
25. श्रीवास्तव, निर्मला. (2020). 'दलित विमर्शः भारतीय परिप्रेक्ष्य'. राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली.
26. कुमार, देवेन्द्र. (2017). 'दलित चेतना और प्रेमचन्द'. नवनीत प्रकाशन, आगरा.
27. त्रिपाठी, संजय. (2021). 'प्रेमचन्द का यथार्थ और आधुनिक संवेदना'. साहित्य सरिता, इलाहाबाद.
28. गौतम, मेघराज. (2018). 'दलित समाज का संघर्ष और हिन्दी कथा साहित्य'. भारतीय साहित्य परिषद्, बनारस.